महेश शर्मा

लेखक परिचय

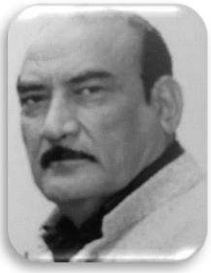

नाम : महेश शर्मा
जन्म : १ दिसम्बर १९५४
शिक्षा : विज्ञान स्नातक एवं प्राकृतिक चिकित्सक।
रूचि : लेखन, पठन-पाठन, गायन, पर्यटन।
साहित्यिक : लगभग ४५ लघुकथाएं, ६५ कहानियां, २०० से अधिक गीत,२०० के लगभग गज़लें, लगभग ५० कविताएँ एवं अन्य विधाओं में रचना।
प्रकाशन : दो कहानी-संग्रह– १. हरिद्वार के हरी, २. आखिर कब तक,
एक गीत संग्रह– मैं गीत किसी बंजारे का
दो उपन्यास– १. एक सफ़र घर आँगन से कोठे तक, २. अँधेरे से उजाले की ओर।
इनके अलावा विभिन्न पत्रिकाओं जैसे हंस, साहित्य अमृत, नया ज्ञानोदय, परिकथा, परिंदे, वीणा, ककसाड, कथाबिम्ब, सोच विचार, मुक्तांचल, मधुरांचल, नूतन कहानियां।
इन्द्रप्रस्थ भारती और अन्य कई पत्रिकाओं में एक सौ पचास से अधिक रचनाएं प्रकाशित।
एक कहानी– गरम रोटी का श्री राम सभागार दिल्ली में रूबरू नाट्य संस्था द्वारा मंचन मंचन।
सम्मान : म. प्र. संस्कृति विभाग से साहित्य पुरस्कार, बनारस से सोच्चिछार पत्रिका द्वारा ग्राम्य कहानी पुरस्कार, लघुकथा के लिए शब्द निष्ठा पुरस्कार, श्री गोविन्द हिन्दी सेवा समिती द्वाराहिंदी भाषा रत्न पुरस्कार एवं अन्य कई पुरस्कार।
सम्प्रति : सेवा निवृत बेंक अधिकारी, रोटरी क्लब अध्यक्ष रहते हुए सामाजिक योगदान, मंचीय काव्य पाठ, माजिक संस्थाओं के माध्यम से सेवा कार्य।

कहानी–अब क्या करेंगे लल्लन गुरु

ऐसा हमेशा से हर जगह होता आया है। मनुष्य जब से सामाजिक प्राणी हुआ है, उसके रहने के तौर-तरिके कुछ नियमों के अन्तर्गत संचालित हैं। कुछ शर्ते होती हैं, कुछ आवश्यकताएं होती हैं। एक गाँव या एक कस्बे या किसी बड़े शहर के एक निश्चीत क्षेत्र में कुछ बातों का प्रावधान होना आवश्यक है। जैसे देशी और विदेशी शराब की दुकान, जैसे अंग्रेजी माध्यम का स्कुल, जैसे कि एक मन्दिर। यद्यपि मन्दिरों की सँख्या एक से अधिक भी हो सकती है। ये उस क्षेत्र की धार्मिकता और दानदाताओं की शक्तिपर निर्भर है , लेकिन कम से कम एक मन्दिर तो आवश्यक है।

तो बात यहीं से शुरु होती है कि मैं जिस कालौनी में रहता हूँ, वहाँ अभी-अभी एक मन्दिर का निर्माण हुआ है। जब कालोनी काटी गई थी तब कालोनाइजर ने मन्दिर के लिये काफी लम्बी-चौड़ीजगह छोड़ी थी। कालौनी के अधिकांश मकान बन जाने और रहवासी आबादी बढ़ जाने के कारण सबको ये महसूस होने लगा कि कालोनी में कुछ कमी सी है। यद्यपि सभी घरों में एक देवस्थान होता है लेकिन अपनी धार्मिक भावनाओं की सार्वजनिक स्वीकारोक्ति, अपनी उत्सवप्रियता दर्शाने की इच्छा और सामाजिक सद्भभाव बनाये रखने को क्षेत्र में एक मन्दिर की नितान्त आवश्यकता होती है।

फिर क्या था तत्काल कालोनी के प्रबुद्ध जनों की मिटिंग रखी गई और मन्दिर निर्माण का प्रस्ताव पास कर सहयोग राशी का सँग्रह प्रारम्भ कर दिया गया। (यहां हम चन्दा शब्द का उपयोग नहीं करेंगे क्योकि यह शब्द बहुत बदनाम हो चुका है।) मन्दिर निर्माण के लिये दान देने वालों में सभी तरह के लोग थे। श्रद्धा से धार्मिक कार्य समझ कर दान देने वाले, अपना स्टेटस बनाये रखने के लिए श्रद्धा ना हो फिर भी बडी राशी देने वाले, मजबुरी में ना नहीं कर पाने वाले , मिटिंग मे गलती से आ जाने का पछतावा लिये न्युनतम सहयोग देने वाले और कुछ सामान्य से दान दाता जो निर्लिप्त भाव से जो बन सके वो देते हैं।

तो इस तरह मन्दिर निर्माण पुर्ण होकर कालोनी का एक महान सामाजिक दायित्व पूरा होकर कालोनीवासियों की धार्मिक आवश्यकता की पूर्ति हो चुकी थी। पास के गाँव से एक ब्राह्मण देवता को खोज कर उन्हें पुजारी का दायित्व भी सौंपा जा चुका था। यद्यपि ब्राह्मण देवता जिनका नाम लल्लन गुरु था, पक्के चिलम बाज थे। गाँजा-भाँग के बडे शौकिन। लेकिन इस बात से उनके ब्राह्मणत्व पर कोई आँच नहीं आती थी ना ही कालोनीवासियों को कोई तकलीफ थी, क्योंकि हमारी संस्कृति में गाँजा भाँग के नशे को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त है। वो तो भूतकाल में सुरा के साथ जाने क्या गलत हुआ होगा या सुराप्रिय लोगों के प्रयास कमजोर रहे होंगे जो देवताओं (सुरों) को प्रिय और स्वीकार्य होने के बावजुद यहाँ पर यानी मृत्युलोक में भद्रजनों के लिये असामाजिक घोषित थी। इसका अफसोस यदा कदा ऐसे भद्रजनोँ को होता रहता था। हालांकि ये भद्रजन वही मध्यम वर्ग के लोग थे जो जीवन में कई कई असमंजस और अनिर्णय में गोते खाते रहते थे। खैर सुरा की सामाजिकता हमारी कहानी का विषय नहीं है।

लल्लन गुरु सुबह शाम बडे प्रेम से पुजा आरती करते शाम को चीलम के दो तीन दौर निपटा के मस्त हो जाते। आरती के बाद कुछ भजन भाव भी होता, लेकिन समस्या आने लगी भक्तों की उपस्थिति की।

कालोनी वासी सुबह जल्दी जल्दी काम पर जाने से पहले भगवान के दर्शन कर जाते लेकिन आरती के समय दो चार भक्त ही रहते। ऐसे ही शाम को भी आरती के निर्धारित समय पर उपस्थिति बहुत कम रहती। यद्यपि महिलाऐं और कुछ बुजुर्ग आते रहते। फिर भी उपस्थिति शोभनीय नहीं थी। भक्तों की कम आवाजाही से मन्दिर का चढौत्रा प्रभावित होता था और चढौत्रा कम होने से लल्लन गुरु का मिजाज प्रभावित होता था। अब इसका हल क्या हो? ये मन्थन लल्लन गुरु के साथ साथ इनके चेले चपाटी जो अक्सर घर वालों से छुपते-छुपाते गाँजे के दो चार कश मार लेते थे वो भी कर रहे थे।

कुछ बुजुर्गवार शाम को आरती के बाद मन्दिर परिसर में बैठ कर अपनी चिन्ता इन्हीं सर्वकालिक वाक्यों में दोहराया करते थे कि ,आजकल तो श्रद्धा-भक्ति बिलकुल खतम हो गई है। लोगों को मन्दिर आने का चाव ही नहीं रहा। भगवान के लिये लोगों के पास समय ही नहीं है, आदि आदि। इसी बीच बाहर से आये एक भक्त ने आरती में कम उपस्थिति के कारण समुचित आनन्द ना आ पाने का एक उपाय भी बताया और उसे कार्य रुप में बदल भी दिया। पुराने समय में मन्दिरों में भक्तों द्वारा घंटे घडियाल झांझ आदि बजा बजा कर आरती को संगीतमयी सुमधुर बनाया जाता था। अब विज्ञान का युग, मशीनों का युग, आदमी कब तक आश्रित रहे अन्य आदमी पर तो कारीगरों ने इजाद कर ली ऐसी संयुक्त वाद्य मशीन जो मन्दिरों में उपयोग आने लगी। ऐसी मशीन जिसमें घंटे, घड़ियाल, ढोलक और झांझ सभी की आवाजें एक साथ आती थी। अब चाहें तो लल्लन गुरु मशीन का स्वीच दबायें और अकेले ही आरती कर लें। और अक्सर यही होने लगा। लल्लन गुरु के चेले चपाटी और दो चार भक्तों के अलावा घरों में बेठे लोगों के कानों में आरती की मधुर ध्वनी गूँजती सब घर से ही भगवान की जय बोलते हुए अपने कर्तव्य की इति कर लेते।

इसी बीच कालोनी में नये नये आये एक व्यापारी ने अपने बेटे के यहाँ पुत्र होने के उपलक्ष में मन्दिर को पुरा साउंड सिस्टम यानी माइक सेट लाउडस्पीकर टेप रेकार्डर आदि भेंट किया। ताकि मन्दिर में शाम को संगीतमय भजनों की सी. डी .बजती रहे और मन्दिर का वातावरण पुर्ण धार्मिक मनमोहक हो जाये।

लल्लन गुरु एन्ड कम्पनी बहुत खुश हुई इस भेंट से। दुसरे दिन ही लल्लन गुरु बाजार गये और चार पाँच सी.डी. भजन और आरती की ले आये। और जोर शोर से बजाना शुरु कर दिया।

अब पाठकों को मन्दिर की भौगोलिक स्थिति बताना आवश्यक हो गया है। कालोनी के लगभग मध्य में स्थित 200 बाय 200 के प्रांगण के बिच में बना पूर्वमुखी मन्दिर था यह जिसके चारों ओर वायर फेंसींग और कुछ पेड़-पौधे लगे थे। सामने पूर्व की तरफ एम पी ई बी के ठाकुर साहब के अलावा 10-15 रहवासी मकान और थे। मन्दिर के बांई ओर यानी उत्तर दिशा

में मुकाती जी, शर्मा जी और शेखर बाबू जैसे कुछ सामान्य नौकरीपेशा लोग थे। पश्चिम दिशा यानी मन्दिर के पीछे की ओर सिचाई विभाग के इंजिनियर गुप्ता जी, रामु सेठ और कांतीलाल आदि के मकान थे और दक्षिण दिशा में यानी मन्दिर की दाहिनी ओर एक बडे ठेकेदार बर्मन दादा और एक दो अफसर रहते थे। इन रहवासियों का परिचय यहाँ देना आवश्यक था क्योंकि अगली एक घटना में इन सब की सहभागिता है।

तो साहब मन्दिर को भेंट में प्राप्त साउंड सिस्टम से सबसे ज्यादा आनन्द लल्लन गुरु एंड कम्पनी को आ रहा था। शाम की आरती के कुछ समय पहले से भक्ति गीत बजना शुरु होते, फिर आरती होती उसके बाद फिर एक-दो घंटे तक भजन, गरबे आदि की धूम मची रहती।

मन्दिर के सामने रहने वाले ठाकुर साब की दिनचर्या पर गौर करें तो शाम 5-6 बजे आफिस से घर आ जाते, जल्दी से फ्रेश होते कुछ समय परिवार के साथ बिताते और चढ जाते दूसरे माले पर जहाँ ओपन छत पर उनकी बैठक जमती। दो तीन कुर्सियां बीच में सेन्ट्रल टेबल और वहीं आलमारी में रखा रसरंजन का सामान। कभी अकेले कभी आफिस से आ जाते श्याम बाबू और फिर चलता रहता तीन चार पेग का सफर। इस दौरान ठाकुर साब श्याम बाबु को अपने पुराने किस्से सुनाते रहते नशा बढता जाता और दो तीन घंटे बाद खाना खाके आराम करते।

मन्दिर में बजने वाले भजन संगीत से प्रथम दो तीन दिन तो ठाकुर साहब को मजा आया, अच्छा लगा। फिर परेशानी होने लगी। ऐसा लगता जैसे पास में ही कोई विवाह समारोह चल रहा हो, श्याम बाबू से बराबर बात नहीं कर पाते दूसरे–तीसरे पेग तक कोई सुरुर ही नहीं आ पाता।" यार श्याम बाबू, ये ससूरा लल्लन कब तक भजन सुनाता रहेगा दो घँटे हो गये, तीन पैग गटक लिये कुछ सुरुर ही नहीं आ रहा। ये तो रोज रोज का नाटक होने लगा। बोलना पडेगा लल्लन को भाई ऐसा नहीं चलेगा।"

और दूसरे दिन ठाकुर साब ने लल्लन गुरु को कान में समझाते हुऐ मन्दिर की गूँबद पर बँधे भोँगे (लाउडस्पीकर जिसे हम पुराने समय में भोंगा कहते थे और गाँवोँ मेँ आज भी इसे भोंगा ही कहा जाता है जो लोहे का लम्बा चिलम के आकार का होता था मन्दिर में दिये गये साउंड सिस्टम के साथ यही था।) का मूँह घूमाकर मन्दिर के बांई ओर यानी उत्तर दिशा में करवा दिया।

शाम छः बजे से आठ बजे तक बजने वाले भक्तिसंगीत के कारण वैसे तो पुरे मन्दिर परिसर और आसपास का वातावरण शोरशराबे से भरपूर हो जाता था , लेकिन जिस ओर भोंगे (लाउड स्पीकर) का मुँह होता था उस दिशा में शोर ज्यादा तेज होता था।

दो तीन दिन बिते ही थे कि बाँई ओर की लाईन वाले रहवासी, मुकाती जी, शर्मा जी और शेखर बाबू ने सुबह आठ बजे ही लल्लन गुरु को घेर लिया। पडिंत जी, ये भोंगा बन्द करो या इसकी आवाज कम करो या इसका मुँह दूसरी तरफ करो।

क्यों ? लल्लन गुरु गुर्राये वो सोच रहे थे इन सब से तो में निपट लूँगा।

क्यों क्या तीन दिन हो गये परेशान हो गये इतना हल्ला, बर्दाश्त से बाहर है। बजाना बन्द करो या इसका मुँह घुमाओ, बस। बहस होने लगी कालौनी के दो चार लोग और आ गये। लल्लन गुरु एंड कम्पनी ने विचार किया यदि ज्यादा हल्ला मचा तो ये सब बन्द भी करना पडेगा। तो रात को फिर धीरे से मन्दिर की छत पर चढ कर भोंगे (लाउड स्पीकर) का मुँह पश्चिम दिशा में यानी मन्दिर के पीछे की ओर कर दिया। अब शाम के भक्ति संगीत से प्रभावित होने वाला क्षेत्र पश्चिम की तरफ हो गया था।

पीछे की तरफ रहने वाले इंजिनियर गुप्ता जी और रामू सेठ को आज कुछ अलग अलग सा लग रहा था। शाम को बाहर बैठे बतिया रहे रामू सेठ से गुप्ताजी पुछ रहे थे आज मन्दिर में कोई प्रोग्राम है क्या सेठ ? बहुत हल्ला-गुल्ला हो रहा है। पता नहीं यार खुब भजन किर्तन हो रहे हैं। रामू सेठ इतना ही बोले। लेकिन अगले दिन शाम को फिर वही माहौल लगा। यार रामू सेठ ये लाउडस्पीकर की आवाज अपने इधर ज्यादा जौर से क्यों आ रही है ? रामू सेठ सोचने लगे तब तक तो गली में

खेलते उनके लडके राहुल ने बताया, दादा वो मन्दिर के लाउडस्पीकर का मुँह अपने घर की तरफ कर दिया है ना इसलिये आवाज जोरों से आ रही है अपने घर की तरफ क्यों ? वो तो सामने की तरफ लगाया था यार। गुप्ताजी को शुरु दिन का मालुम था। अरे सर पहले सामने मुँह था, फिर ठाकुर साब ने लल्लन गुरु को पटा के उसका मुँह दक्षिण दिशा में करवा दिया। फिर? गुप्ता जी चौंके। फिर क्या मुकाती जी, शर्मा जी आये उन्होने लल्लन गुरु से झगडा किया, तो उन्होने स्पीकर का मुँह अपने घर की तरफ कर दिया।

अरे वाह ! हम सब क्या चुतिये हैं। बुला साले लल्लन गुरु को रामू सेठ गुर्राये। लेकिन गुप्ताजी ने उन्हें रोका, रुको सेठ अभी रात को बखेड़ा मत करो। कल सुबह इस लल्लन गुरु की बारह बजा देंगें। फिर वही हुआ। अगले दिन सुबह 9 बजे गुप्ताजी, रामू सेठ और कांतीलाल आदि ने लल्लन गुरु को धर दबोचा, "क्यों लल्लन गुरु, हम सब बेवकुफ हैं क्या?"

क्यों सेठ क्या हुआ ?

हमारे कान अजगर जैसे हैं क्या ? या कालोनी में हम ही सबसे बडे पापी हैं ?

अरे पर हुआ क्या गुप्ता साब ? लल्लन गुरु ने नासमझ बनते हुए फिर पूछा।

ज्यादा चालाकी नहीं पंडित आज दिन में ही लाउड स्पीकर का मुँह हटा देना हमारी तरफ से शाम के पहले पहले बस वरना ..., चलो सेठ अब शाम को देखते हैं।

लल्लन गुरु एंड कँपनी परेशान थी "अब क्या करेंगे लल्लन गुरु ?" एक दिशा बची है, उधर ठेकेदार साब रहते हैं वो भी ज्यादा बजाने नहीं देंगे। बन्द करें साले भोंगे को ?

एक साथी ने सुझाव दिया, ठेकेदार साब तो रोजाना बहुत देर से देर आते हैं और ऐसे डरेंगे तो कुछ कर ही नहीं पायेंगे। भगवान का नाम लेके कर दो उधर भोंगा, देखेंगे जो होगा। तत्काल एक भक्त चढा मन्दिर की गुंबद पर, और भोंगे का मुँह कर दिया दक्षिण दिशा में।

बडा ताज्जुब था और सुकुन भी था लल्लन गुरु एंड कँपनी को। पूरे तीन दिन हो गये थे कोई विरोध नहीं कोई टोकाटोकी नहीं। बड़े मजे में भजन संगीत शाम 6 से 8 बजे तक चल रहा था। सलाह देने वाला भक्त अपनी सफलता पर इतरा गया था। देखा मैंने कहा था ना कुछ नहीं होगा। अरे सभी लोग पापी थोड़े ही होते हैं भक्ति संगीत के दिवाने भी होते हैं लोग।

चौथे दिन सुबह की आरती करते ना करते एक खबर खोजी दौड़ता हुआ आया और लल्लन गुरु के कान में जल्दी-जल्दी कुछ राज की बात कह डाली और ये जा-वो जा। लल्लन गुरु चिन्ता में पड़ गये। जैसे-तैसे आरती पूरी करी, प्रसाद बाँटा, मन्दिर में ताला लगाया और रवाना हो गये।

कुछ देर से आने वाले भक्त लोग आश्चर्य में थे, आज मन्दिर के पट जल्दी कैसे बन्द हो गये ? लल्लन गुरु कहाँ चले गये ? भगवान के दर्शन करना था, कुछ समझ नहीं आया क्या हुआ ? आपस में पुछताछ चल ही रही थी कि दो पुलिस जवान आकर मन्दिर के सामने खडे होकर लल्लन गुरु का पूछने लगे। कालोनी वालों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। लल्लन गुरु का कहीं पता नहीं था। मन्दिर के दाहिनी ओर रहने वाले ठेकेदार साब भी आ गये थे, वो भी पूछ रहे थे, कहाँ गया लल्लन गुरु ? तभी बातों-बातों में पता चला ठेकेदार साब ने थाने पर लल्लन गुरु के नाम रिपोर्ट डाल दी है। और पता चला कि कल रात को ठेकेदार साब मन्दिर में आकर लल्लन गुरु को खुब चिल्लाये थे, सालों ने कालोनी वालों का सोना हराम कर रखा है। 15 दिन से धूम मचा रखी है, भोंगा बजा-बजा कर। लल्लन गुरु ने भी ठेकेदार को कुछ बोल दिया था। बस फिर क्या था ठेकेदार ने दूसरे दिन रिपोर्ट डाल दी।

अब लल्लन गुरु को लेने पुलिस आ गई थी। इधर-उधर तलाशते पुलिस ने लल्लन गुरु के चेले-चपाटियों से भी पूछा लेकिन, कुछ पता नहीं चला कि लल्लन गुरु कहाँ गये। कुछ देर तक पुछताछ कर पुलिस तो चली गई, कालोनी वासी आपस

में बतियाते बिखर गये लेकिन शाम होते-होते फिर सब इकट्ठे होने लगे। पिछले पंद्रह दिनों से धूमधड़ाके से गूंजता भजनसंगीत की स्वर लहरियों में डुबता मन्दिर परिसर आज बिलकुल खामोश शान्त और सुनसान सा लग रहा था। इकट्ठे हुए लोग थोडी देर की कानाफुसी के बाद वापस घर की ओर चल दिये।

भगवान बिना शाम की आरती के ही रह गये। फिर सुबह हुई, मन्दिर में वही ताला लटका हुआ था। लल्लन गुरु का कहीं पता नहीं था। क्या भगवान का सुबह का स्नान भोग, पुजा आरती आज भी नहीं होगा? महिलाओं और बुजुर्गों की चिन्ता बढ़ने लगी, बातें होने लगी, कैसा कलजुग आ गया है, पुजारी को डरा धमका कर भगा दिया। लोगबाग भगवान के भजन सुनने से भी बचते हैं। घोर कलजुग के लक्षण हैं। क्या होगा दुनिया का भगवान?

ये सारी बातें बिना किसी का नाम लिये की जा रही थी पर संकेत साफ था। तीसरा दिन भी भगवान बन्द ताले में ही रहे बिना पुजापाठ बिना स्नान-ध्यान और आरती के। शाम होते-होते ठेकेदार साहब को भी चिन्ता होने लगी। तीन दिन से मन्दिर बन्द पड़ा है, अब तो सारा पाप मेरे ही सर चढ़ने वाला है। ठेकेदार के घर की महिलाएं ज्यादा चिन्तित हो रही थी, पुजापाठ शीघ्र चालु करवाने की जिद की जा रही थी।

उधर सामने वाले ठाकुर साब, मुकाती जी शर्मा जी, पीछे वाले रामू सेठ और गुप्ता जी सभी भयभीत थे। कालोनी वालों को पिछले पंद्रह दिन की सारी घटनाओं का पता चल चुका था। दबी जुबान से इन सब लोगों को घोर पापी ठहराया जा रहा था। सभ्य और धार्मिक लोगों की बस्ती में भगवान 3-4 दिन से बासी बैठे हैं, तत्काल समस्या का हल निकालना पड़ेगा।

ताबड़तोड़ कालोनी वालों की आपात् बैठक बुलवाई गई मन्दिर का ताला तोड़ने पर चर्चा हुई लेकिन पुजारी की भी तो व्यवस्था जरुरी है। मिटिंग में बैठे लल्लन गुरु एंड कम्पनी से जुड़े एक गंजेड़ी ने अचानक एक राज की बात खोली। उनका कहना था कि यदि ठेकेदार साब पुलिस रिपोर्ट वापस ले लें और कालोनी वाले लल्लन गुरु की रोजी रोटी ना छीने तो वो आज शाम तक कहीं से भी लल्लन गुरु को खोज निकालेगा। जरा देर नहीं लगी सबने तत्काल हां भर दी। ठेकेदार साहब ने भी तत्काल अपनी पुलिस रिपोर्ट वापस लेने का वादा किया|

फिर क्या था शाम होते-होते महागुरु लल्लन प्रकट होते भये। जोर-शोर से मन्दिर की साफ-सफाई करी दिन भर। शाम होते ही आरती के घंटे घड़ियाल बजना शुरु हो गये। हाँ साउँड सिस्टम आज बन्द था, भोंगा शान्त था। आरती में आज भरपुर उपस्थिति थी।

आरती के बाद कुछ बुजुर्गों ने समझाया, लल्लन गुरु कालोनी में रहना है, मन्दिर की पूजा करना है तो, कालोनी वालों के अनुसार चलो। भजन-संगीत बजाना है तो, धीरे बजाओ। उसको सुनाओ, जिसे सुनाना हो, जो सुनना चाहता हो। जो सुनना नहीं चाहते, उनको जबरदस्ती क्यों सुनाना।

धार, मध्य प्रदेश